हिंदी साहित्य और समाज

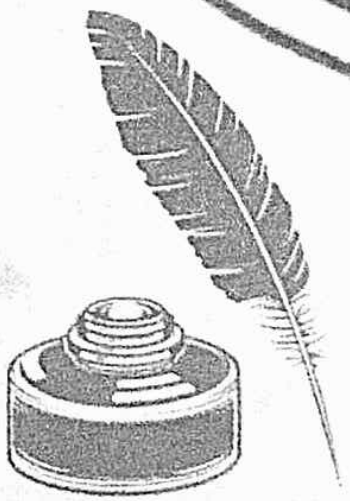

संपादक

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार

प्रा. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

परिकल्पना

© संपादकद्वय

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 595

ISBN : 978-93-95104-12-8

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना,* के. 37, अजीत विहार, दिल्ली-110092
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ला, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

अनुक्रम

भूमंडलीकरण और ज्ञानेन्द्रपति की कविता 13
—डॉ. प्रिया ए.

यशपाल के 'अमिता' उपन्यास में मानवीय मूल्य 20
—प्रा.डॉ. सालुंके शिवहार भुजंगराव

हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान 26
—दीप्ति सिंह

हिन्दी में नारी विमर्श 32
—डॉ. वडचकर एस.ए.

'धोखा' : सहजीवन की समस्या 36
—डॉ. परविंदर कौर महाजन (कोल्हापुरे)

'प्रवासी हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श' 41
—डॉ. रजिया शहेनाज शेख अब्दुल्ला

राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत स्वाधीनताकालीन हिंदी काव्य साहित्य 46
—प्रा. सुनिता मडके

हिन्दी साहित्य में आर्थिक चित्रण 51
—प्रो. डॉ. राजश्री भामरे

शम्बूक : अधिकार हनन और अभिव्यक्ति प्रतिबंध के प्रति विद्रोह 56
—प्रो.डॉ. रमेश संभाजी कुरे

21वीं सदी महिला कथालेखन का बदलता स्वरूप 62
—डॉ. शेख शहनाज अहेमद

स्त्री विमर्श उपन्यास में चित्रित स्त्री समस्याएँ 69
—डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

हिंदी की वैश्विक स्थिति 76
—डॉ. विजय शिवराम पवार

21वीं सदी महिला कथालेखन का बदलता स्वरूप

डॉ. शेख शहनाज अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष, हुतात्मा जयवंतराव महाविद्यालय,
हिमायतनगर, जि. नांदेड

21 वीं सदी में स्त्रियों ने सफलता के विभिन्न आयामों को छुआ है। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कामयाबी का परचम लहराते हुए पुरुषों के पक्ष समकक्ष खड़ी हो नहीं बल्कि उनके वर्चस्व को भी चुनौती दे रही है। अपनी मेहनत के वल पर उसने स्वयं का एक अलग अस्तिव व पहचान कायम की है।

भारतीय दर्शन में जहाँ पुरुषों को आय एवं रक्षा का माध्यम माना गया है, वह नारी को दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। भारतीय समाज में स्त्रियों को सदा पुरुषों से कमतर आँका गया। उसे अबला, कमजोर और निर्बल कहकर उसका उपहास उड़ाया गया। उसे एक तरफ देवी तो दूसरी ओर उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया। परंपरा, धर्म, संस्कृति की आड़ में उसे बेड़ियों में जकड़ कर रखा। धीरे-धीरे नारी को नर्क में धकेला गया। रक्षा का सहारा लेकर उसको अधिकारों से दूर रखा गया। परिणाम स्वरूप समाज में स्त्रियों की स्थिति और भी भयावह होती चली गयी।

19 वीं सदी में कुछ ऐसे समाज सुधारक समाज के उद्धार के लिए सामने आये। जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए अनेक आंदोलन किए। महात्मा ज्योतिबा फूले ने अपनी पत्नी सावित्री बाई को शिक्षिका बनाकर महिलाओं के लिए स्कूल खोला। सावित्रीबाई ने महिला उत्थान हेतु कई कदम उठाये। फूले दम्पति ही का अनुसरण कर और समाज सुधारको ने महिलाओं के लिए आंदोलन कर उनको जागृत करने का कार्य किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के वाद स्त्रियों के अंदर बदलाव का दृष्टिकोण जागा। यह सब उनको दी गयी शिक्षा का परिणाम था, जिससे वह परिवार और समाज में अपनी भूमिका को लेकर शारीरिक और मानसिक रूप में संघर्ष करती रही। स्त्रियों

के इस बदलाव के वारे में डॉ. वीरेंद्र सिंह ने लिखा है, "एक ओर जहाँ परिवार का परंपरागत स्वरूप टूटा, वहीं दूसरी ओर स्त्री स्वतंत्रता के कारण नवयुवक स्त्रियों के स्वरूप में परिवर्तन आया। जो स्त्रियाँ आजीविका के साधन स्वयं जुटाती थी उनकी मानसिकता में धीरे-धीरे व्यापक परिवर्तन आया और इस प्रकार उन्होंने जीवन और चिंतन के स्तर पर पुरुषों के समान ही स्वयं को प्रस्तुत करने की कोशिश की।"[1]

साहित्य समाज का दर्पण होता है। वह सामाजिक परिवर्तन का जीवंत दस्तावेज है। नारी भी शिक्षित होकर अपने अस्तित्व के प्रति जागृत होने लगी। वह इस साहित्य से कैसे दूर रह सकती थी। इक्कीसवीं सदी में समाज, परिवार और व्यक्ति में जो वदलाव आया है उसका असर हिंदी साहित्य पर भी हुआ। स्त्री शिक्षा के कारण उनमें मानसिक और वौद्धिक स्थिति में काफी वदलाव हुआ है। उसने अब पुरानी रूढी, परंपराएँ और मान्यताओं को तोड़कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मार्ग अपनाया है। 21वी सदी के साहित्य का स्वरूप अव वह नहीं रहा जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व था। नारी के साथ भी समाज, परिवार के संवंध पूर्व जैसे नहीं रहे। परिवार भी अव महिला को सवला वनाने में पूर्ण कोशिश कर रहा है। वर्तमान में नारी अपनी सही भूमिका को खोजती हुई स्वयं को एक पहचान दिलाने में आगे बढ़ रही है। वह अपनी हाथ में लेखनी लेकर स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए सहायक सिद्ध हो रही है।

इक्कीसवीं सदी का नारी लेखन हमें आधुनिकता, वैज्ञानिकता, तार्किकता, समसामायिकता तथा युगीन भाव बोध का परिचय कराता है। आज का नारी लेखन, उच्च कोटि का होने के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण भी है। इस सदी की महिलाओं ने अपने लेखन में जीवन और समाज के सभी रंगों को अपनी तूलिका रूपी लेखनी से बड़ी भावात्मकता और कलात्मकता से उकेरा है। इनमें कहीं वृद्ध समस्या है तो कहीं नारी मुक्ति की छटपटाहट, कहीं किसी वड़े परिवार की समस्या है, तो कहीं आधुनिक जीवन का खोखलापन।

आज की कहानियों की अधिकांश नारी पात्र परंपरागत ढांचे को तोड़ देने को तत्पर है। कहानी 'घरौंदा नही, घर' की 'सरोजा' भी अपनी दुर्गति के कारणों को जानकर उस पर विचार-मंथन करती है। वह सोचती है, "क्यों नहीं मैं लादे हुए बंधनी को तोड़ती हूँ? सच कहती हूं कि अपने को तिल-तिल व मारने वाली मैं, क्यों डरती हूँ कि यदि मैं पति द्रोह करूंगी या उससे अलग हो जाऊंगी तो मेरे चारो ओर 'छिनाल' शब्द का भयंकर शोर मच जाएगा? मेरे सतीत्व पर कीचड़ के छींटें पड़ने लगेंगे। जैसे मेरा सारा व्यक्तित्व और अच्छाइयाँ ही समाप्त हो जाएँगी।

इसीलिए तो मुझे बार-बार संदेह होता है कि मैं विद्रोह नहीं कर रही है। विद्रोह करने की क्षमता मुझमें नहीं है। है तो मुझमें त्रिया-हठ। वरना मुझे विद्रोह तो कर देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करूंगी तो मेरी देह का मरणासन्न रूप में विष मंथन होता रहेगा।''[13] अंततः सरोजा अपने पति और ससुर के अत्याचारों से तंग आकर, समाज की बनाई गयी खोखली मान्यताओं व परंपराओं को दरकिनार कर अपने पति का घर छोड़ देती है। इतना ही नहीं, सरोजा शिक्षित होने के कारण अपने अधिकारों का प्रयोग करना बखूबी जानती है। यह सच है कि, नारी अपनी और अपने परिवार की इज्जत की खातिर बहुत कुछ सह जाती है और जब उसकी सहनशीलता समाप्त हो जाती है तो वह चुनौती देने से भी नहीं डरती। वह चुनौतीपूर्ण अदालत का दरवाजा खटखटाने की बात करती है। कहानी के अंत में उहापोह की स्थिति में फंसी 'सरोज' एक सशक्त और सक्षम चरित्र के रूप में सामने आती है। वह सरकारी नौकरी प्राप्त कर अनामिका को गोद लेकर अपनी एक अलग दुनियाँ बसाती है। वास्तव में पुरुष पर स्त्री की निर्भरता ने उसे अपने अधिकारों से वंचित रखा। किंतु आज की नारी अपनी शक्ति को पहचाना है। अब वह नहीं सोचती की उसका क्या होगा। वह अपने पैरों पर खड़े होकर खुद अपने जीवन का फैसला कर रही है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी लेखन की कहानी की बात की जाये तो यकीनन कहा जा सकता है कि महिला रचनाकारों ने हिंदी कहानी के परिदृश्य को ज्यादा व्यापक, संवेदनशील और मानवीय बनाया है। अपने आस-पास के परिवेश का सच शब्दों में रूपायित होकर कल्पना के सही अनुपात में संयोग से कथा का आकार ग्रहण कर लेता है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक से ही नारी कहानी लेखन का वर्चस्व दिखाई देता है। इनमें से कई लेखिकाओं ने अपना लेखन इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर जारी रखा है। इनमें ममता कालिया, नासिरा शर्मा, मेहरुन्निसा परवेज, चित्रा मुद्गल, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, मधु कांकरिया, मनीषा कुलश्रेष्ठ आदि। ममता कालिया ने नारी विमर्श दृष्टिकोण से प्रामाणिक लेखन किया है।

इस दौर की कहानियों में 'स्त्री' शहरी हो या ग्रामीण वह प्रेमचंद की कहानियों के नायिका की तरह मूक प्रतिरोध नहीं करती बल्कि अपने ऊपर होने वाले छोटे-बड़े सभी प्रकार के अत्याचारों का खुलकर सामना करती नजर आती है। मजबूरी में वो ना तो कोई काम करना चाहती और न ही किसी को अपना फायदा उठाने देती है। अनीता गोपेश की कहानी 'अन्ततः' की 'दिव्या' जो एक नाटक कंपनी में काम करती है। निर्देशक द्वारा दिये गए छोटे कपड़ों को पहन कर नृत्य करने से इनकार कर देती है। वह स्पष्ट शब्दों में कहती है, ''सर! माफ करिएगा

मैं इस पोशाक में डांस नहीं कर पाऊँगी।''[14] वहीं दूसरी तरफ ग्रामीण परिवेश से संबंध रखनेवाली 'साँच है प्रेम' की सब्जी बेचनेवाली 'हँसली' बड़ी ढिठाई के साथ 'रत्तु' से कहती है, ''सुन रे रत्तु मैं तेरी नियत को जानती हूं। तू जो सब्जी खरीद करता है न, वह कुत्ते की माँ भी जैसा लगता है। मुझे इसमें तेरी आँखों में अजीब सी चमक आने लगी है जैसे बिल्ली की आँखों में होती है, पर मुझे एक बात साफ कह दूं। हँसली ऐसी वैसी लड़की नहीं है। सड़क का नलका नहीं है कि कोई भी आता जाता पानी पी ले।''[15] हँसली किसी भी मायने में अपने को दुर्बल या कमजोर अबला नहीं मानती। वह अपने माँ के साथ गाँव में बड़ी गरिमा और सम्मान के साथ रहते हुए लोगों की ललचाई नजरों से खुद को बचाती है। इस कहानी के माध्यम से रचनाकार ने सबला नारी का रूप प्रस्तुत किया है, जो मौका होने पर भ्रष्ट हवलदार या पुलिस वाले को भी फटकार देने से पीछे नहीं हटती।

उपन्यास के क्षेत्र में भी स्त्री लेखन पिछले दो-तीन दशकों से एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना चुका है। कहानी की तरह ही महिला उपन्यासकारों ने उपन्यास के माध्यम से आधुनिक नारी की सारी समस्याएँ और संवेदनायें को सशक्त ढंग से लिखा है। कृष्णा सोबती की मित्रो मरजानी एक अक्खड़ और दबंग औरत की एकांतिक तस्वीर प्रस्तुत करती है। वहीं उषा प्रियंवदा की 'रुकोगी नहीं राधिका', 'पचपन खंभे लाल दीवारें' और 'शेष यात्रा' में परंपरा और रूढ़ियों के द्वंद्व में फँसी एक आधुनिक स्त्री की अस्मिता को ढूंढने का प्रयास है। मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' की नायिका शकून की कहानी हिंदुस्तान के हजारों औरतों के त्रासदी की कहानी है। ममता कालिया के उपन्यास 'बेघर' और 'एक पत्नी के नोटस' में एक मध्यवर्गीय पढ़ी-लिखी महिला और पढ़े-लिखे वर्ग को बेनकाब करते हैं। नारी लेखन के क्षेत्र में मृदुला गर्ग के उपन्यास 'अनित्य', 'चित्तकोबरा', 'मैं और मैं', 'कठगुलाब' आदि ऐसे उपन्यास है जिसमें स्त्री विमर्श के विभिन्न रंग देखने को मिलते है। 'आँवा' और 'एक जमीन अपनी' चित्रा मुद्गल का उपन्यास महत्त्वपूर्ण है। 'कोरजा' उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज ने आदिवासी परिप्रेक्ष्य में एक औरत के त्रासदी का वर्णन किया है। नासिरा शर्मा का उपन्यास 'एक और शाल्मली' में स्वतंत्र चेतना से युक्त स्त्री की कहानी है जो अपने पति से संवाद चाहती है, बराबरी का दर्जा चाहती है। चंद्रकांता का 'अपने अपने कोणार्क', गीतांजली श्री का 'माई' आदि ऐसे उपन्यास है जिनमें औरत के सामाजिक सरोकार उभर कर सामने आते है। नारी लेखन की एक और प्रसिद्ध लेखिका प्रभा खेतान का 'पीली आँधी' तथा 'छिन्नमस्ता', मैत्रेयी पुष्पा 'इदन्नमम तथा चाक', मधु कांकरिया का 'सलाम आखिरी' अल्का सरावगी का 'शेष कादंबरी' आदि

प्रमुख स्थान रखते है।

आज लड़कियां किसी भी मायने में लड़कों से कम नहीं है। वे अपनी शिक्षा और जागरुकता के पल पर अपने ससुराल के साथ-साथ अपने माता-पिता के प्रति भी जिम्मेदारियों का निर्वहन बखूबी करती हैं। आज अमूमन स्त्रियाँ अपने बूढ़े माता पिता का सहारा बनना चाहती है। घर में भाई के ना होने पर वे, बेटी होने के वास्तविक उत्तरदायित्व को निभाना चाहती है, इसके लिए वह पति और ससुराल वालों से लड़ने का सामर्थ्य भी रखती है। 'जाग उठी है नारी' कहानी की नायिका 'भूमि' वर्तमान स्त्री के रूप का प्रतीक बनकर उभरती है। जो अपने बूढ़े माँ-बाप के जीवन निर्वहन का सहारा बनने हेतु, पति 'शोभन' के द्वारा दिए गए तलाक के पेपर तक साइन कर देती है। वह कोर्ट में भी तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात रखती है। और पति शोभन द्वारा लगाए गये आरोपों को गलत साबित करती है। वह कहती है, "मेरे ऊपर लगाया गया आरोप बेबुनियाद है जज साहब। मैं कोई पैसा शोभन की कमाई का नहीं लुटाती। मैं तो अपनी तन्ख्वाह में से बेसहारा माँ-बाप की मदद करके अपना फर्ज अदा करती हूं। जिस माँ-बाप ने पाल-पोसकर मुझे बड़ा किया, पढ़ा-लिखाकर नौकरी लगवाई। आज वे बूढे और लाचार है। उनका मेरे सिवा कोई और संतान नहीं तो क्या मैं भी अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाऊँ। नहीं जज साहब! मैं ऐसा नही कर सकती। समाज पतन की ओर जाएगा। यदि बेटी माँ-बाप का सहारा नहीं बन सकती तो कौन देगा परिवार में कन्याओं को जन्म? कन्या भ्रुण हत्याएँ होंगी। अब नारी को ही कुछ करना होगा, उसे जागना होगा, आज मैं जाग उठी है, कल कोई और जागेगा।"[5], इसी सोंच से आज बेटियों को घर परिवार में बेटों जैसा सम्मान-अधिकार दिलाया है। आज वें घर में बोझ नहीं बल्कि परिवार का बहुमूल्य हिस्सा बन गयी है। आज वह पूरे परिवार का बोझ उठाने में सक्षम हो गयी है।

वर्तमान महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी द्वारा न केवल विवाहित अथवा अविवाहित स्त्रियों के बदलते सशक्त स्वरूप का भी चित्रण किया है। विधवा तथा तलाकशुदा स्त्रियों की बदलती छवि को पेश करते हुए उनके पुनर्विवाह के प्रति परंपरागत मानसिकता को परिवर्तित करने में भी सफलता हासिल की है। 'आंच' की वाल विधवा 'सुमन' उसकी जमीन हड़पने और इज्जत लूटने आये पंडित जगन्नाथ और ठेकेदार माणिकलाल के आँखों में मिर्च झोंक देती है। अपने शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न के बावजूद वह टुटती नहीं बल्कि अपने प्रेमी दिलीप से विवाह करने का फैसला लेती है। जब दिलीप उसे गाँव वालों से डरके गाँव छोड़ने को कहता है तो सूमन पलायन की अपेक्षा संघर्ष का रास्ता अपनाती

है और वहीं गाँव में डटकर निर्भयता से रहने का निर्णय करती है। वह निर्वल नही बल्कि क सबल विधवा के प्रतिरोध की साक्षात प्रतिमूरत बनकर उभरती है।

सच यह है कि आज की वर्तमान महिलाओं ने अनेक कीर्तिमान गढ़े हैं। आज स्त्रियों ने समाज में अपनी स्वतंत्र, अपने वर्चस्व का परचम बखूबी लहराया है। उसने पुरुष सत्ता के बराबरी में अपना एक अलग एवं अहम अस्तित्व कायम किया है। किंतु विडंबना यह भी है कि स्त्री-स्वातंत्र्य की इस छीना-झपटी में स्त्रियों ने अपने नैसर्गिक चरित्र का हनन भी किया है। हक, अधिकार, समान दर्जा व पुरुष की बराबरी की इस स्पर्धा में वह अपनी उच्छृंखलता को ही अपनी वास्तविक स्वतंत्रता व स्त्री-सबलीकरण का वास्तविक पर्याय मान चुकी है। साहित्यकार का उद्देश्य होता है पाठक के समक्ष यथार्थ को प्रस्तुत करना। अतः वर्तमान हिंदी कहानी और उपन्यास के इस उच्छृंखल रूप को भी बड़ी बेबाकी से प्रस्तुत किया है। 'बताना जरूरी है क्या' कहानी में आज की उच्छृंखल स्त्री को रिप्रेजेंट करती है। नायिका इतनी बोल्ड है कि अपने बैंककर्मी द्वारा उसके प्रोफेशन के बारे में पूछे जाने पर वह कहती है, "डोंट राइट हाउसवाइफ मै प्रोफेशन में हूँ। आई एम प्रोफेशनल कालगर्ल।"[6] इतना ही नहीं वह आगे कहती है, "मेरी कोई मजबूरी नहीं थी। मेरे साथ कोई हादसा नहीं हुआ। मुझे इस पेशे में किसी ने जबरदस्ती नहीं धकेला। मैं इसमें अपनी मर्जी से आई हूं। अमीर खानदान से हूँ सो धन की कोई कमी नहीं थी। सिर्फ मस्ती के लिए मैने इस प्रोफेशन में कदम रखा।"[7] स्पष्ट है कि 21वीं सदी की यह नारी न तो गरीबी के कारण इस धंदे में आयी न तो उसकी कोई अन्य मजबूरी या विवशता है। वह सिर्फ अपने शौक के लिए यह कार्य करती है। वास्तव में यह आज के समय की सबसे बड़ी सच्चाई है। फर्राटेदार अंग्रेजी बोलने वाली और आधुनिक फिल्मी स्टाईल पोशाख पहन कर निकलने वाली अधिकांश कॉलगर्ल संपन्न परिवारों की ही होती है। जो अपनी आधुनिक सुख-सुविधा के भोग की ख्वाहिश को पूरा करने के लिए इस रास्ते को सहर्ष स्वीकार करती है। इतना ही नही आज शिक्षित और जागृत स्त्रियाँ भी इनकी पूर्ति के लिए गलत रास्ते अख्तियार कर रही है। अपने करिअर को ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए अपनी देह का उपयोग करने से भी नही कतरातीं। 'वह लड़की' कहानी की नायिका अपने बॉस के यौन आमंत्रण को स्वीकार कर प्रमोशन पा लेती है। तो वहीं घरगृहस्ती में काम करनेवाली नारी 'उस पार की रोशनी' कहानी में अपने उस रूप को उजागर करती है, जिसके लिए अपनी जिंदगी और महत्वकांक्षाएँ इतनी जरूरी है कि वह अपने पति को धोखा देकर दूसरे मर्द से संबंध बनाती है। इस प्रकार वर्तमान समय में नारी के उच्छृंखल रूप को उजागर करनेवाली कहानियाँ

अनेक है जो नारी मुक्ति के नाम पर गलत रास्ता अपना रही है।

इस प्रकार 21वीं सदी की महिला कथाकारों के साहित्य में परिवार और समाज के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन मिलता है। नारी लेखिकाओं के लेखन का स्वर बदला है और समय के साथ-साथ नारी की भूमिका में क्रमशः अंतर आता गया है।

संदर्भ

1. हिंदी कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन, डॉ. विरेंद्र यादव, नमन प्रकाशन दिल्ली
2. वाह किन्नी वाह, शर्मा यादवेंद्र, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2010
3. क्या गुनाह किया (कहानी संग्रह), जैमिनी अंजू, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली 2007
4. मोम के रिश्ते, गोपाल कृष्ण शर्मा, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली
5. वही, पृ. 34
6. क्या गुनाह किया (कहानी संग्रह), जैमिनी अंजू, पृ. 27
7. वही, पृ. 29